काव्य संग्रह

खून बहुत सस्ता है

पद्मा शर्मा

अनुक्रम

1. आतंक का जहर
2 .स्त्री सशक्तिकरण
3. सरकार बहादुर
4. पीढ़ी की पीड़ा
5. विज्ञापन की महिला
6. मेरी मुम्बई
7 चीरहरण
8 स्त्री के काम
9 पाॅलीथीन
10 आठ बाइ बारह की दुकान
11 सेल्स गर्ल
12 चिकुनगुनिया
13 दिए की रोशनी
14 महिलाओं का शासन
15 एक पर एक फ्री
16 मानवता के दुश्मन
17 चार बेटे
18 दीवाली
19 सिर्फ सलाम आया
20 किराए की कोख
21 दुविधा क्यों है जीवन में
22 माॅल
23 माटी दीप
24 तुम रोज चले आया करो
25 बोतल में बन्द पानी
26 दिल तो है दौलत नहीं
27 इलाहाबाद के तट पर
28 हादसे
29 इन्सानी चेहरे
30 हिन्दुस्तान का भविष्य
31 नए राज्यों की माँग

32 रोशनी
33 मानव में हैवान
34 समाचार
35 व्यावसायिकता
36 पितर हमारे
37 विद्या
38 फुटकर
39 पहली नजर
40 कुछ पल का मेहमान
41 वृक्षारोपण
42 सदाचार
43 भँवरे
44 अनेकता मे एकता
45 लखपति हो गया
46 माँ समता की सूचक
47 तिलक की होली
48 पानी रोको अभियान
49 वर्षा
50 पेड़ का अस्तित्व
51 बन्धन
52 नववर्ष का आगमन
53 तुम जो साथ होते
54 पति के कंधे पर पत्नी का हाथ
55 ओसकण
56 सरकार का रिटायरमेन्ट
57 क्षणभंगुर जीवन
58 बन्दूक और गोली
59 छीना झपटी
60 खतरा
61 क्या कहना
62 जल का कल
63 कामगर बच्चे
64 खून बहुत सस्ता है

डॉ॰ पद्मा शर्मा

शिक्षा . एम0ए0पीएच॰डी॰

प्रकाशन . कहानी संग्रह रेत का घरोंदा

कहानी संग्रह " जल समाधि और अन्य कहानियाँ "

प्रसारण . आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से कहानी
कविता वार्ता एवं परिचर्चा प्रसारित।

फीचर लेखन।

सम्पादन . अध्येता ;पत्रिका विरासत ;पत्रिका

पुरस्कार 1हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा ' प्रज्ञा भारती' की उपाधि।

2, राष्ट्र धर्म ;पत्रिका लखनऊ द्वारा राधेश्याम चितलांगिया कहानी पुरस्कार' ' ।

3 दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा साबित्रीवाई फुले पुरस्कार' ' ।

4 भद्रावती महा राष्ट्र द्वारा प्रतिभा सम्मान पुरस्कार ।

5 मप्र हिंदी साहित्य सम्मेलन का वागीश्वरी पुरस्कार
6 साहित्य अकादेमी मप्र का सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार

5 हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग इलाहबाद के तत्वाधान में
अयोध्या में आयोजित अनुष्ठान में शाश्वतामृत सम्मान' ' ।

सम्प्रति . उच्चशिक्षा विभाग में सहायक प्राध्यापक।

सम्पर्क . एफ.1 प्रोफेसर कॉलोनी शिवपुरी म॰प्र॰ 473551

दूरभाष . 07492.225725ए मो॰ 09926626607

आतंक का ज़हर

होते हैं जहर बुझे सयाने लोग
कुछ जहर भरे, ..पर अबोध भी
जहर उतार दिया जाता है
दिमाग की नस-नस में,
जो है अन्दर
बाहर है उसकी ही अभिव्यक्ति

शिव ने पीकर तरल
कण्ठ मंे समा लिया गरल
किया कल्याण सबका

यहाँ तो जहर के स्पर्श मात्र से
बन जाते हैं जहरीले
और...जैसे भस्मासुर

सच तो यह है कि
पीड़ित और वंचित भी
बदले में देते हैं वही
जो मिला है उन्हे
जहर के बदले जहर
कहर के बदले कहर

अमूमन जहर
भर दिया जाता है जेहन में,
दिमाग के हरेक स्मृति कोश में
जो बाद में
फैला दिया जाता है पूरे जिस्म में
परिवार में, मुहल्ले मे,
प्रदेश में, देश में
और फिर समूचे ब्रह्माण्ड में
जलते हैं उसमें लोग।

जो जलाते हैं वे भी
नहीं रहते अछूते

उनका भी जल जाता है बहुत कुछ
पर हावी है दिलो दिमाग पर
जहर... सब तरफ जहर...

आतंक का जहर...
भाषा का जहर...
सम्प्रदाय का...
धर्म का ...
गाफिल हैं सब जहर के नशे में
कुछ दीख नहीं पड़ता आँखों से
जहर का असर
या हो आंख की कोई बीमारी ं
और अगर
'सर्जरी' न हो
तो तब्दील हो जाता है
काले पानी में वह धीमा जहर
जो होता है पीड़ादायक
और भी अधिक...

दिखती है केवल बन्दूक ,
गोली,... /बम...
विनाश का सामान
इसी में जश्न मनाते हैं
जहर बुझे लोग...
जहर पिये लोग...

स्त्री सशक्तिकरण

गैस पर चढ़ी भगौनी में
उबलते दूध की तरह
खदक रहे हैं विचार
मन में मन्थन , बौध्दिक चिन्तन
शाम को है वक्तव्य
विषय है स्त्री सशक्तिकरण

मम्मी लन्च बाक्स दो
बेटे की आवाज से
टूट गयी तन्द्रा
विचार छिन्न-भिन्न

बच्चों के जाते ही
फिर से विचारमग्न
पानी की मोटर की
घन्न घन्न
गुम हो गये विचार
मस्तिष्क हुआ सुन्न

कुकर की सीटी से
लौटी विचार बीथी से
खाना बना क्या ?
पति की आदेश भरी पुकार
इन सबके बीच बचे नहीं
सब्जी की तरह कट गये विचार
गुंथ गये आटे में नमक की तरह
दाल के बघार की तरह
ऊपर ही ऊपर, तितर-बितर

पति के आॅफिस जाते ही
विचार पुनः हावी
कपड़े घोने थे
क्योंकि
बिजली की अभी आमद थी
मशीन की घिर्र-घिर्र

दिमाग से धुल गए
तथ्य और विचार

फिर कुछ सोच पाती
उससे पहले ही
महरी की तुनक
बर्तन की घिटपिट

ऐसे ही गुजरे पल
मन को मिला न संबल

दरवाजे की दस्तक
बच्चों की आवक
भोजन , होमवर्क
कई काम थे

शाम को उसे जाना है
आॅफिस से पति लौटे
उसके बाद का समय
दिया है उसने
वक्तव्य देने के लिए

उसके पास समय ही कहाँ
देने के लिए
कहने को तो 'हाउस वाइफ' है
सही तो है 'घरेलू पत्नी'
पर पत्नी का घर है क्या ?

वह करती है घर की देखभाल
पर उसकी करेगा कौन ?

वह देती है भाषण
स्त्री सशक्तिकरण पर

फूला है पति का मुँह
बच्चों की शिकायतें
उनकी फरमाइशें

बदलती है लौटकर कपड़े
घुस जाती है रशोई में
रात्रि के भोजन की तैयारी में

सरकार बहादुर

सरकारें ऊँचे दर्जे की होती हैं
उसके होते
खराब स्थिति पैदा ही नहीं होती
वे न सुनती हैं,
न बोलती हैं
न देखती हैं
वे हैं निर्लिप्त,
निर्विकार
तभी तो हैं सरकार

अनंत ,अबूझ पहेली
बाहुबली की हमजोली

जो मितभाषी
बोलते हैं कभी-कभी
बन जाता है इतिहास
सबके लिये खास

सरकार में तूफान, बवण्डर,
धूल, मिट्टी,
पहाड़, गिट्टी
सब है

एक अन्तहीन और कई खण्डों वाली
रहस्यमयी कविता जैसी
मेहरावदार घाटी हो वैसी
अपनी बनाई
पर अपनी समझ से बाहर
मनसा ,वाचा, कर्मणा से दूर
पास से लिजलिजी ,दूर से हूर
अर्थीय ऊर्जा लगाने के बजाय
सिर्फ एक सलाह से
निबट जाती हैं मुश्किलें
यही है सरकार का जादू

आतंकियों से घनिष्टता

यही है चारित्रिक विशिष्टता

आम लोगों के दुर्गुण
जब धारण करती है सरकार
तो बन जाते हैं वे सद्गुण

बचपन से ही
आदमी को सिखाते है
हठधर्मिता का निषेध
पर सरकार की हठधर्मिता
उसकी अदा कहलाती है

पीढ़ी की पीड़ा

इस पीढ़ी ने पीड़ा दी हमको बेदर्द जमाना क्या जाने
जन्मा हो बेरूखी में वो प्यार की भाषा क्या जाने

माँ मातृत्व में पिघले माॅम सी , पापा लाड़ से हुए पाॅप
सम्बोधन सब बने है नकली , सम्बंध सरसता क्या जाने

अनुनय -विनय को छोड़ दिया , आक्रोश से अब हैं लेते काम
हाथ जोड़ना भूल गये , नत मस्तक होना क्या जाने

हिय हैरान हताश हेय-सा , मन मे कुण्ठित केंचुली है
खुद परेशां अपने से , फिर खुश रखना वो क्या जाने

पीछे भाग रहे पश्चिम के , वैसे ही होंगे सब आचरण
मन में वहशी विचार हैं , तन आवरण को क्या जाने

विज्ञापन की महिला

चेहरे पर खुशी

आँखों में उत्साह
मेकअप की कई पर्तों में ढँकी
सजी-सँवरी
बाहर से हँसती हुई
अन्दर से गमगीन
पर खिली हुई दीखती हैं
विज्ञापन की महिलाएँ

दिल में हैं कड्र जख्म
छुपाकर उनको
खिलखिलाती हैं
घर जाकर फिर उनसे
होना है रूबरू

वे कैमरे में और कमरे में
होती हैं अलग - अलग
उनकी रील लाइफ
और रियल लाइफ
होती है बिल्कुल अलग

गर्मी के विज्ञापन में भी
मर्द रहते हैं सूट-बूटेड

असह्य सर्दी के विज्ञापन में
है नारी अर्द्धवस्त्र
पता नहीं किसका
कर रही हैं विज्ञापन
या दे रही हैं ज्ञापन

खोजी नजरें तो
कपड़ों के अन्दर से भी
ले लेती हैं नाप
सीने और अधखुले वस्त्र
ओछे और छोटे वस्त्र
नाममात्र के कपड़े
कर रहे हैं प्रचार किसी वस्तु का

साथ ही प्रसार किसी और ‘बात’ का

सब ओर वे ही दिख रही हैं
चाहे उत्पाद
मर्दों के लिए हों
स्त्री के लिए हों ,
या बच्चों के लिए

इनका होना जरूरी है
वे अपनी अदा
अपनी देह
दिखाने का
सबको रिझाने का
ले रही हैं मेहनताना

उन्हें नहीं मालूम
वे बन गयी हैं श्रमिक
पैसा पा रही हैं श्रम का
पर वो भी आधा

तिजोरी भर रहे हैं
वे लोग
जो देते हैं मेहनताना
शोषण कर रहे हैं
जेबें भर रहे है
दे रहे हैं कम
पा रहे हैं मनमाना
उनकी देह और मन के
उत्पीड़न का बुन रहे हैं
सरेआम ताना-बाना

मेरी मुम्बई

ये मेरी मुम्बई है
इसने झेले हैं कई जख्म

कई चोंटें भी
खाई हैं कई ठोकरें भी
कई घाव हुए इसके दिल में
इसकी इमारतों में हुए हैं
दर्दनाक हादसे

जवानों ने यहाँ के
झेले हैं कई खतरे
वो रात का मंजर
भूले न भुलेगा
इतिहास का लेखा है
कइयों की गयी जान
कुछ दिन खोयी मुम्बई
कुछ पल ठिठकी
कुछ क्षण सोयी
फिर से चल पड़ी
अपनी इठलाती चाल
ये मेरी मुम्बई है

राह में पड़ी लाश
दफ्तर और होटल के धमाके
बाढ़ में फँसे वाशिंदे
खतरों में फँसे लोग
कुछ दिन सहमी रहती है
डरी सी मुम्बई
फिर से चल पड़ती है
अपनी बल खाती चाल
ये मेरी मुम्बई है

रोज होते हैं उत्पात
कभी भाषा के , कभी जाति के
कभी नस्ल को लेकर
कभी जन्मना अंचल को लेकर
लड़ते हैं लोग अक्ल खोकर

पूरा देश सहम जाता है
विश्व भौंचक्का हो जाता है
शुरु हो जाता है विवाद
दंगंे-फसाद
पर जैसे कुछ हुआ ही न हो
शांत ,निर्भीक
चल पड़ती है
अपनी आत्म विश्वासी चाल
ये मेरी मुम्बई है

चीरहरण

चीर हरण क्या करे दंशासन हरने को ही चीर नहीं है
आँखें बंद क्यों करें पितामह आँखों में वो पीर नहीं है

यहाँ तो हारी खुद ही सीता रावण हारा असमंजस में
देह दुकान धरे बैठी ये सावित्री भी अधीर नहीं है

जिस तन में ममता का सागर उसमें अब कामुकता दिखती
विचार हुए हैं समृद्ध बड़े ही भाव मगर गम्भीर नहीं हैं

भारी हैं लाखों के जेवर वस्त्र हुए छोटे उतने हैं
सुन्दरता की लगीै नुमाइश रांझे की अब हीर नहीं है

जान लुटा दे देश की खातिर शत्रु का कर डाले संहार
अरि को अब जो मार गिराए शायद वो शमशीर नहीं है

अपनों से ही आँच आन पर किस का करें भरोसा
बचा सके जो लाज नारि की ऐसा अब बलबीर नहीं है

स्त्री के काम

लौट आयी है वो काम से
पुकारी जाती है घर में
वो दूसरे नाम से

घुसते ही उठाती है मोजा
राह में पड़ा पति का
रखती है सहेजकर
बच्चों की बिखरी किताबें ,
जूतों को लगाती है करीने से
फिर अपनी जूती उतारती है

कमरे में रखी जूठी प्लेटें
और गिलास पानी के
रखती है घिनौची पर
तब हाथ का पर्स
रखती है अल्मारी में

कपड़े बदल हाथ मुँह धोकर
चाय चढ़ाती है गैस पर
बच्ची की ठुनकती बोली
ध्यान ले आती है होमवर्क पर

चीनी , चाय पŸााी डाल
देखती है सब्जी नदारद
क्या बनायेगी रात को
अब आयेगी उसकी ही शामत

दूध डालती है
उबलती है चाय
अन्दर भी उबलता है बहुत कुछ
बस खदकता रहता है
उफनता नहीं

चाय की चुस्की , उड़ती भाप
मन में कई सारे काम
उनकी गुंजलक में
भूल गयी है स्वाद
बस मीठा और गरम 'कुछ' है
अपने न होने का अहसास

दो आलू की सब्जी
पति और बच्चे खाकर
सो चुके हैं कबके
बचे हैं पतीली में चार टुकड़े

अधपेट खाती है वह
पेट के लिए कमाती है वह

बिस्तर पर लेटकर भी
अगले दिन की तैयारी
पूरी रणनीति
बनती है मन में
थकान तन में
पलक झपकती है
नींद में बड़बड़ाती
बच्ची को थपकती है

सिर में दर्द, आँखों में नींद
जकड़ रहा है बदन
हो रही थकन

तिस पर भी
पति की इच्छा को
करती है पूरा अनिच्छा से
पिस रही है वो
भीतर और बाहर

फिर जाती है वो काम पे
वहाँ पहचानी जाती है वो
दूसरे नाम से

पालीथिन

क्या चाहिये आपको
फल - सब्जी , दाल - दही
घी , दूध , मही

जरूरत नहीं लादकर घर से
थैला लायें
हुजूर हाजिर है
पालीथिन
साहब की खिदमत में

कई रंग हैं इसके
हरा , लाल , पीला
सफेद , काला , नीला
पर
रेशा - रेशा है जहरीला

गर्म चाय , चटनी, समोसा
या पिज्जा, पेस्टी ,डोसा
पालिथिन हाजिर है

यह अविनाशी है
मौत नहीं दे पाता पानी भी
मिट्टी, वायु और आकाश तक

वह देती है
मौत और मात दोनों
पशु खाये तो मौत होती है
सारे पैंकिंग सामान को
धता बताकर
मात देती है

चल रही है निर्विध्न
वाल्यावस्था से गुजरकर
यौवन में प्रवेश है उसका
अपनी चरमोन्नति पर है

वह सबकी संग सहेली हैं
महिलाओं के बैग की
पुरुषों की डिग्गी की

लिपिस्टिक , शीशे और कंघे के साथ
पालीथिन भी रहती है बैग में

उसकी सहनशक्ति तो देखिए
वह सब सहती है
मिर्च की चिरपिराहट
करेले की कड़वाहट
समोसे की गरमाहट
और तेल की चिपचिपाहट

जय हो
पालीथिन !
तेरी जय हो
तेरी उम्र की जय हो
तेरी जिन्दादिली की जय हो
तुम नित निर्भय हो

आठ बाइ बारह की दुकान

आठ बाइ बारह के
दो कमरों का मकान
आगे कमरे में सुबह
सज जाती है दुकान

गोली , बिस्कुट , चाकलेट
कुरकुरे और अंकल चिप्स
इसके शुरूआती थे सामान

पर अब ...
सिमकार्ड , वेल्यू वाउचर
कई तरह के पाउच
कुछ ठण्डे पेय पदार्थ
पढ़ाई सम्बन्धी छोटा मोटा सामान

रात को एक कोने में
सिमट जाती है दुकान
स्थिर हो जाती है
दिन भर की चलती-फिरती दुकान

दुकान वाले फ्रिज में
रख दिए जाते हैं रात में
घर का दूध और सब्जी भी
हो जाता है शुरू परिवर्तन

टुकुर-टुकुर देखता है बच्चा
अंकल चिप्स के पैकेट को
चाहत है पा लेना
खुल जा सिम सिम के
चमत्कार को

माँ खोलकर एक पैकेट
चार देती हैं गिनकर चिप्स
फिर रख देती हैं सहेजकर
अगले दिन की रात के लिए

अनुपस्थिति में कर्ता की
बैठती है पत्नी
या फिर बूढ़े पिता
जो अक्सर
दिन में रहते हैं अन्दर

बदल जाता है रात में
पिता का स्थान
बिछ जाता है छह बाइ ढाइ का
फोल्डिंग पलंग
बूढ़ा बुजुर्ग पा जाता है
दरवाजे पर होने का सम्मान

सेल्स गर्ल

स्वागत किया उसने
मुस्कान के साथ

व्हाट केन आइ डू फार यू ...?
उछाला एक जुमला
मुस्कान के साथ

हिन्दी में मिला
स्वेटर चाहिए...

कई सारे डिब्बे
डिब्बों में बन्द
सर्दी का मंत्र

एक स्वेटर
एक मुस्कान
दूसरा...
तीसरा...

आँखों में अपनापन
चेहरे पर ताज़गी
हल्का सिंदूर , लाली सुर्ख होठों पे
शरारती लट , इठलाती कपोलों पे

ये देखिए
संुदर रंग
सुंदर डिजाइन
फबेगा आप पर
फिर वही मुस्कान

यकायक घण्टी बजी
उसके सेलफोन की
कुछ क्षण का व्यवधान
फिर वही मुस्कान

अब आँखे नम

अ्रगला स्वेटर
अगली मुस्कान

कैद न रह सके अश्रुकण
दर्द भरी मुस्कान

बीमार बेटा
बिगड़ती हालत
बच्चे का रूदन
आँख में पानी
फिर वही मुस्कान

लुभाने का , रिझाने का
एक अदद प्रयास
छिपाकर दर्द
फिर वही मुस्कान

चिकुनगुनिया

मेरे सपनों की उजाड़ दी दुनिया
तुझे क्या मिला चिकुनगुनिया

शाकाहारी हम ,खाया न कभी चिकन
पहने कपड़े सादे , ओढ़ा न कभी चिकन
खाते रोटी-दाल ,हुआ न दालगुनिया
तुझे क्या मिला चिकुनगुनिया

खड़े होने में लाचार , मचा घुटनों में धमाल
चलने पर लोग कहें , तौबा ये मतवाली चाल
बिन घुँघरू थिरके , की ताता थइया
तुझे क्या मिला चिकुनगुनिया

तप रहा शरीर, जोड़ सारे खुल गये
मुख दमके लाल, दर्द पुराने हिल गये
उगे शरीर पर दाने ,चोटों में चमकेे बिजुरिया
तुझे क्या मिला चिकुनगुनिया

दिल बसे थे जो, होते हैं खड़े वो दूर
मन ही मन में हँसकर खुश होते भरपूर
शाप दिया हमने, तुझे भी हो जाये चिकुनगुनिया
तुझे क्या मिला चिकुनगुनिया

संबोधन में आ रहा अब तेरा ही नाम
मिल रही बधाई , तेरी ही दुआ सलाम
चिकुनगुनिया की होवे चिकुनगुनिया की राम राम
फोन पर भी पूछे लोग क्या हाल है चिकुनगुनिया
तुझे क्या मिला चिकुनगुनिया

मांगी थी वो पूरी हुई , डाॅक्टर की मन्नत
केमिस्ट को तो मिल गयी, जमीं पर ही जन्नत
खरीदी काली मिर्च, लौंग, कपूर की गोलियाँ
दवा के कर्ज ने बजा दी टुनटुनिया
तुझे क्या मिला चिकुनगुनिया

रामबाबू को लगता, ओसामा को लगता
डांटता है जो मुझे उस अधिकारी को लगता
वादे न किए पूरे उस नेता को लगता
इतना भी न समझा सिलबिलिया

तुझे क्या मिला चिकुनगुनिया

संसद में होती तेरे नाम की पुकार
तुझे यदि जल्दी ही, मान लेती सरकार
मिलती कोई मदद, होती धन की भरमार
लेता कोई पदक, बनता तू गुनिया
तुझे क्या मिला चिकुनगुनिया

दिए की रोशनी

बिजली टिमटिमाती रही
आयी कम ज्यादा जाती रही

इन्तजार में उसकेे
सालों साल गुजार दिए
न वह आयी, न अँधेरा हटा
 हर पल अँधेरे का साया ही रहा

रोशनी तो बेवफा थी,
अँधेरा ही बस मेेरा रहा
पल दो पल की मेहमां थी वो
अँधेरे का ही ज्यादा बसेरा रहा

दिए ने दी भरपूर रोशनी
बस यँू ही गुजारा किया
गुजारा वक्त दिए की रोशनी में
रोशनी में ही अक्स
मुझे अपना दिखा

दो गज के फासले तक
फैली थी रोशनी
उसमें ही मेरा अहम् (मैं)
अपने आप से मिला

महिलाओं का शासन

अब महिलाओं का शासन
होगा देश में
रसोई और खेतों के अलावा भी
किन्तु ...
लिखी गयी जो गाथा
बरसों पुरानी
लगेेगा समय बदलने में

फार्म भरने के बाद
वे सब फिर से
लग गयी हैं काम पर
पार्षद , नगरपालिका अध्यक्ष,
महापौर और सरपंच पद की प्रत्याशी

कुछ स्वयं चालित हैं
बांकी पति द्वारा संचालित

उनके पार्षद पति,
अध्यक्ष पति,
मेयर और
सरपंच पति हैं

लेने हैं उनको ही निर्णय
यहाँ तक कि
हो रहे हैं उनके ही स्वागत
दे रहे हैं वे भाषण
पहन रह हैं फूल माला

महिलाएँ तो बैठी हैं
अब भी
घर में ,
रसोई में,
आँगन में
बच्चे पालतीं , खाना बनातीं,
झाड़ू बुहारतीं
कण्डे पाथतीं हुई

रंच मात्र
शासन नहीं कर पायीं
घर पर भी

फिर ...
कैसे करेंगी शासन देश पर

पुरुष प्रधान समाज पर

एक पर एक फ्री

एक पर एक फ्री का जमाना चल रहा था
हमारे भी मन में लालच पल रहा था

लड़की वाले बोले क्या - क्या लेंगे आप
हमने भी पूछ लिया क्या-क्या देंगे आप

वे बोले फ्रिज, टी. व्ही. , गाड़ी - साड़ी सब देंगे जी
हमने कहा ये नहीं एक पर एक फ्री लेंगे जी

वे बोले नहीं है
हमने कहा उत्पाद कराइये

वे बोले दो का क्या करेंगे आप
एक से ही जन्नत मिल जाती है अपने आप

मैं बोला स्वर्ग - नरक दोनों भोगूँगा
फिजूलखर्ची को रोकूँगा

पड़ोस वाली आंटी एक पर एक फ्री लाती हैं
एक बार में ही समय और धन दोनों बचाती हैं

मैं भी ऐसा ही करूँगा
पिता के सर से बेटी का बोझ कम करूँगा

एक के खत्म होने पर दूसरी काम आती है
और एक के बिगड़ने पर दूसरी काम चलाती है

दो हाथ हैं , दो पैर हैं , दोनों से दबाउँगा
एक घर रहेगी , एक से नौकरी कराउँगा

लड़की वाले बोले क्या आपके घर सब दो हैं ?
हमने उत्तर दिया एक माँ, एक पिता , हम भाई दो हैं

तब वे बोले कोई बात नहीं
हमारे घर तो उत्पाद नहीं

आपके यहाँ एक पर एक फ्री कर लेंगे
आपका भाई कहाँ है आपकी इच्छा पूरी कर देंगे

लड़कियाँ जब गर्भ में , इसी तरह मारी जायेंगी
लड़कों की संख्या होगी ज्यादा

और लड़कियों की महामारी आयेगी

़़़

तब लड़के नहीं, लड़कियाँ ही

एक पर एक फ्री पायेंगी

मानवता के दुश्मन

आग की लपटों ने

बम के धमाकों ने

मानवता के होते चिथड़ों ने

फिर से बता दिया है
अलग हैं सब
एक नहंीं
न अब न तब

डिब्बे जुड़कर
एक रेल बन जाती है
पर डिब्बे रहते हैं अलग
उसकी सवारी अलग

संस्कृति
सभ्यता
धर्म
कुछ भी तो एक नहीं
झूठी शान में जी रहे हैं
कि हम सब एक है

किसी के वेश और
पर्वों को अपनाकर
एक नहीं हो सकते
जब तक कि मन से
एक न हों
दिल से एक न हों

क्या गलती थी छोटे बालक की
जो राह चलते आदमी को
उसके गिरे सामान की
दे रहा था इत्तला

उसके सामान को
उस तक चाहता था पहुँचाना
सहेज रहा था उसको
इन्सानियत ही उसकी
ले डूबी उसको

अचानक धमाका हुआ

जो पूरा साबुत मानव था
टुकड़ों में बँट गया
देश की तरह

हाथ अलग, पैर अलग
सिर अलग था
अब वह चिथड़े- चिथड़े था
जिनको सिलकर
साबुत नहीं बनाया जा सकता

रक्त के दाग
पड़े थे जगह-जगह
ये अमिट दाग हैं
हिन्दुस्तान के पन्नों में
अमिट स्याही से लिखे गये
कई जगह दिखे गये
अन्त नहीं है इनका

जीवन्त है इतिहास
जो इनपे लिखे गये हैं
मानवीयता के दुश्मन
अब भी कई जगह
दिखे गये हैं

दीवाली

इस बार दीवाली कुछ ऐसे मनाई जाये
शहर के बीचों बीच , एक दीप रखाया जाये
जिसमे तेल डाले शहर का हर वाशिंदा

मैल मिटे मन का रौशन हो हर बन्दा

गले मिलके वो मिटाये दूरी हर दिल की
सुनता है फरियाद खुदा , हर रहमदिल की
चाहे कोई कौम हो , चाहे कोई धन्धा
देते हैं सबको रोशनी सूरज और चन्दा

सिर्फ सलाम आया

न वो आए मेरे दर पे ,न कोई पैगाम आया
जब शाम हो गयी तब सिर्फ सलाम आया

गुजरे हैं हम कई दौर से , खाकर के ठोकरें
दिल पे लगी ठेस लब, पे न तबभी नाम आया

कम करने बेकरारी मेरी, भेजी थी अपनी तस्वीर
खुद ही वो चहिए था, फोटो न मेरे काम आया

मन को बैचेनीयां मिली, आँखों को मिली खुमारी
दर्द जब दिल में पले ,काम न शहर तमाम आया

बेकसी की इन्तहा वफा जब बेवफा हो गयी
थामा था कभी हाथ, उसमें आखिर जाम आया

किराए की कोख

सब कुछ मिलता है
किराए पर
कपड़े , गहने , गाड़ी
मिल जाते हैं माँ-बाप भी

दाम चुकाओ
सब कुछ पाओ

मिलने लगी है अब तो
किराए पर कोख
भर जाती है
असमर्थ माँ की गोद

सहेजती है वह
कितने प्यार से उसे
पेट में अपने
नौ माह

माँ का अहसास,
उसके संस्कार,
उसका अक्स,
उसका वजूद,

पल - पल की प्रगति
उसका घूमना
सिकुड़ना
पीड़ा में भी
भावना है प्यार की

ये सब अहसास
कर नहीं पायेगी
गोद लेने वाली माँ
खरीदने वाली माँ

पैदा करने वाले से
होता है बड़ा
पालने वाला

तभी तो नाम है
यशोदा माँ का
देवकी से कहीं ज्यादा

पहले एक रिवाज था
हो शायद अब भी ...

बचते नहीं थे बच्चे जिसके
वह खरीदकर अपना ही बच्चा
मिटा देता था असगुन
तभी तो कहा जाताा था-मोल का लीना

पर नहीं मिलेगी सरोगेटी को
विदेशी नागरिकता
नयी सभ्यता, नयी संस्कृति
नए रिवाज के लिए
कानून भी बदले जायेंगे
क्योंकि
अभी समय शेष है...
लचीला है सब कुछ
वो उसका देश है
पर ये मेरा देश है

दुविधा क्यों है जीवन में

कितनी सादी ये जिन्दगानी
फिर दुविधा क्यों है जीवन में
कभी धुँधली कभी गहरी होती

आशाएँ हैं मेरे मन में

उत्ताल तरंग आयी भँवर में
सिमट गयी वो क्षण भर में
मंजिल तक मैं बड़ती ही चलूँ
तब तक स्पंदन है तन में
पौध लगाऊँ उजड़े गुलशन में
फिर दुविधा क्यों है जीवन में

सुख बिना कहीं चैन नहीं
और दुःख बिना कोई रैन नहीं
दीन दुःखी इस जग में रमते
दिल मेरा दर्शक नैन नहीं
मन आहत हो पर-क्रन्दन में
फिर दुविधा क्यों है जीवन में

कली बदली को चीर चाँद
रजनी को रौशन करता है
तम दुर करने को सूरज
जग को उजियारा करता है
मन मयंक मेरा धरती के गगन में
फिर दुविधा क्यों है जीवन में

क्यों पुष्प में कांटे होते हैं
कमलिनी कीचड़ में खिलती है
क्यों मानव मन में आशा संग
कुण्ठा सितटी - सी रहती है
ज्यों सर्प लगे हों चन्दन में
फिर नुविधा क्यों है जीवन में

माल

खेत की उपजाऊ जमीन
बिक गयी है
वहाँ क्रांकीट की

कई मंजिला माल की
नींव पड़ गयी है

नीचे कारों का बसेरा
ऊँची दीवारों का घेरा
विशाल अट्टालिका
कई दुकान
उपलब्ध समुचित साधन
जीवन के साजो सामान

कंघा, जूते, कपड़े...
जूस , कोल्ड ड्रिंक्स भिन्न-भिन्न
पिज्जा , पेस्ट्री, मंचूरियन

बर्तन , गहने
बच्चों के खिलौने
साज- सज्जा के सामान

जीवन के सारे फलसफे
बीच में फव्वारा
सबसे ऊपर सिनेमाघर

लिफ्ट का आवागमन
प्रसाधन भी सजे-सँवरे हुए
चकाचैंध से पटे हुए

सभी चीजें
एक ही स्थान पर
जैसे कोई हाट-बाजार
या लगा हो मेला

लेकिन उसकी आंखें किसने देखीं
जिसके खेत में उगा है यह कांक्रीट का जंगल
वो तो

घुस नहीं पाता दरवाजे के अंदर तक
तगड़ा दरबार भगा देता है उसे
टुकुर टुकुर देख रहा है वह
देश के इस विकास को
माल का

माटी दीप

रोशनी का पर्व है दीवाली
करे दूसरों को रोशन

घर-घर छाये खुशहाली

रंग - बिरंगी झालर और बल्व
सुख, यश, वैभव

मोमबत्ती में छिपी हे
रोशनी जीवन की

एक अकेला माटी दीप
खुशबू , शीतलता
और रोशनी का पूरा
अमिट है , अडिग है
न अपने अस्तित्व को
मिटने देता है
न मिटाता है दूसरे को
दिया रहता है ज्यों का त्यों
जलती सिर्फ बाती है

माटी दीप, माटी दीप
हमारी वर्षों पुरानी थाती है
नेह का तेल है इसमें
संस्कार की बाती है

तुम रोज चले आया करो

ऐ मेरे कद्रदान , इस दिल-ए-फकीर के वास्ते
इस चमन -ए-गुलिस्ताँ में
तुम रोज चले आया करो

ये गुलाब ,ये क्वांग -पोश,
ये लहलहाती डालियाँ

मदमाती हैं जिस्मों में
खुशबू की अंगड़ाइयाँ
इस रंग भरे मौसम में
तुम रोज चले आया करो

हरा , नीला , लाल-पीला
सतरंगा इन्द्रधनुष
यहाँ से साफ दिखती है
बादलों की साजिश
इस बर्षाती मौसम में
तुम रोज चले आया करो

दिल धड़क उठता है
जब चलती हवा झकझोर
बात हिलते ,गात डुलते
धूल उड़ती करती शोर
इस हैवानी मौसम में
तुम रोज चले आया करो

घटाटोप अंधकार
बिजली चमके बारम्बार
नख से लेकर शिख तक
डूब रहीं चीज हजार
इस तूफानी मौसम में
तुम रोज चले आया करो

बोतल में बन्द पानी

बोतल में बन्द पानी
स्टाल पे बिकता पानी

बस में, रेल में
बसस्टैण्ड और रेल्वे स्टेशन पर
लेता हूं बड़े गर्व से
लेकिन पता कहां है कि
अपने ही गाँव का
खरीद रहा हूँ पानी

रोजगार मिलेगा गाँव में
सोचकर यही
लगने दिया कारखाना
वहीं के लोग
पी रहे हैं , जी रहे हैं
खरीदकर पानी

कारखाने में काम करके
मिलता नहीं उतना
पानी खरीदने में
लगता है दाम दुगुना

पोखर सूख गये हैं
कुए का खत्म हुआ पानी
नदिया भी सिमट गयी है
दे देके अपना पानी

भरते हैं तिजोरी अपनी
कब्जे कर करके
कभी देश पे किया कब्जा
तो कब्जे में किया पानी

हाय रे ! किस्मत उनकी
पाचन में बड़ी है शक्ति
कब्जे की आदत से
कभी कब्ज नहीं होती

बेच-बेचकर पानी
उनकी आँख का

मर गया है पानी

दिल तो है दौलत नहीं

मेरे पास दिल तो है दौलत नहीं

कहते हैं लोग दिल के बिना दिल्लगी नहीं
पर मानते हेैं लोग दौलत के बिना जिन्दगी नहीं

दिल के दरम्यान दरिद्रता में दयाउपजा करती है
किसी को तड़पते , सिसकते , रोते देख नहीं सकती है
वह कौन सी शक्ति है, जो ऐसा करती है
अमृत सा अर्पित दिल ही तो है, दलदली दौलत नहीं
मेरे पास दिल तो है, दौलत नहीं

दिल ही दिलदार बनाती , दो दिल में प्यार जगाती
दोस्ती का हाथ बढ़ाकर जो , दुर्जन को साने से लगाती
वह कौन क- सी भक्ति है, जो ऐसा करती है
स्नेहसिक्त वह दिल ही तो है, खोखली दौलत नहीं
और मेरे पास दिल तो है, दौलत नहीं

दुनिया के दुःख दर्द को जो महसूस करती है
देव बसते जहाँ, धैर्य की धारा बहती है
वह कहाँ की धरती है , जहाँ पे ऐसी बस्ती है
भावनाओं से भरा दिल ही तो है, काली दौलत नहीं
मेरे पास दिल तो है, दौलत नहीं

इलाहाबाद के तट पर

स्त्री एक नहा रही थी
इलाहाबाद के तट पर
देख रहे बैठे गाँधी
सत्य, अहिंसा के रथ पर

सूख रही थी धोती आधी
आधी थी तन पर
दरिद्रता की अमिट छाप
छोड़ गयी थी मन पर

प्रण लिया गाँधी ने
धोती आधी पहनने का
सर्दी, गर्मी, बारिश में
अर्धनग्न रहने का

देश हुआ कुछ ऐसे विकसित
कदम आगे बढ़ते गये
विचार हुए गाँधी के तिरोहित
कपड़े कम होते गये

प्रदर्शिनी लगी है अंगों की
फैशन है, छलावा है
ओछे वस्त्र मजबूरी नहीं
अब तो एक दिखावा है

हादसे

सड़क पर ही नहीं, आसमान में भी
होते हैं हादसे
कार के ही नहीे प्लेन और हैलीकाॅप्टर के भी

कलपुर्जे बिगड़ जाते हैं
या बिगाड़ दिए जाते हैं
ये वारदात नहीं, होते हैं हादसे

जमीन पर बिगड़े वाहन से
उम्मीद रहती है बचने की
निकल सकती है तरकीब
जड़ें फिर से जमने की,
इसलिए आसमां में होते हैं अचूक हादसे

अनचाहे व्यक्ति को
जड़ से उखाड़ फेंकने के हैं ये तरीके
हमारा प्रिय हो जाता है अज्ञात
पर आसमान से भला कैसे बचेगी जिन्दगी
इसलिये काम तमाम करते हैं हादसे

एक जाँच टीम बनती है
घटना को दुर्घटना का जामा पहनाने के लिये
करती है शेष काम पूरा
कई बड़े लोग खत्म हुए इसी तरह
कई बड़े लोगों के साथ हुए हैं ऐसे हादसे

इन्सानी चेहरे

हर इन्सानी चेहरे ने
एक नकाब ओढ़ लिया है
बाहर से है गहर रिश्ता
पर अन्दर से तोड़ लिया है

वैसा जिगरी कोई नहींहै
वफादार भी वो लगता है
पर जब हुए परेशां हम तो
उसने भी मुख मोड़ लिया है

मेरे लिये जो गैर थे
मुझसे जो लिये बैर थे
मजलब पड़ने पर उसने भी
हमसे नाता जोड़ लिया है

जीवन रूपी नइया सबकी
कभी डूबे कभी तर जाये
मिल जाने पर एक निराशा
भाग्य को क्यों फोड़ लिया है

हिन्दुस्तान का भविष्य

अनचाही गर्मी की
बेतुकी बारिश में
प्रकृति की साजिश में

भूत बना बुजुर्ग खड़ा है

देश की ेबेहाली पर तड़पड़ा रहा है
जवान वर्तमान दिशाहीन बन
अपने ही पैरों पर लड़खड़ा रहा है
और वो देखो हिन्दुस्तान का भविष्य
नंगा नहा रहा है

छांेटे से लेकर बड़े अमले में
सभी घूस खाते हैं
बगीचे से लेकर गमले में
सभी घास उगाते हैं
बीमारों को छोड़ो, अच्छों को जरूरत है
फलों की जगह , घास के अहाते हैं
वो देखो हिन्दुस्तान का भविष्य
घास खा रहा है

परीक्षा में पास होकर
पायेगा पुत्र लक्ष्य को
करते हैं उन्नति ,
पर दूर रखें सत्य को
छोड़ दिया है सबने , अब किताबी पथ्य को
वो देखो हिन्दुस्तान का भविष्य
नकल चबा रहा है

नए राज्यों की माँग

हड़ताल और माँग का
अटूट सम्बन्ध है

जब भी कोई माँग हो
अपनाते हैं हड़ताल का रास्ता
शासन करने की महत्वाकांक्षा में
विभाजित हुआ हिन्दुस्तान
अस्तित्व में आये
बांग्लादेश और पाकिस्तान

अब देश के ही राज्य
और उन राज्यों के भी राज्य और जिले
अतना ही नहीं
अब फिर से नवीन राज्य
कितने टुकड़ों में बँटेगा मेरा भारत

बँध्अबारे होने पर
धरतीसिमट जाती है
लोग बँट जाते हैं
पानी , भाषा , जाति ,
क्षेत्र , वर्ग, धर्म में
और न जाने किस- किस नाम पर
करना होगा अपने ही
क्षेत्र का विकास
बिना द्वन्द्व
ईष्र्या-द्वेष के
ताकिअँटवारा न हो
दफन करना होगा
शासन की महत्वाकांक्षा को
ताकि बँटवारा न हो

रोशनी

दीप और मोमबत्ती
चाँद और फुलझड़ी
देते हैं सब रोशनी

फुलझड़ी में बला की तेजी
फिर घुप्प अँधेरा
क्षणिक होती है रोशनी

शीतल है रोशनी चाँद की
प्रकृति से सहेजी किरणें
होते हैं पुष्प भी मुकुलित

मिटाके खुद का अस्तित्व
रोशन करती है मोमबत्ती
देती है संदेश
लोग उसके द्वारा
करते हैं विरोध भी

दीप की लौ टिमटिमाती है
पर देर तक रहता है उसका आसरा
भले हो छोटा सा दायरा

मानव में हैवान

विभिन्न वर्ण और वर्ग के , लोग जहाँ दिलवर रहते हैं
सुन लो प्यारे दोस्त हमारे, उसको ही सबजग कहते हैं

किसका दुःख होता है किसका , किसी को न समझें वो रब का
इक दूजे पे सब हँसते हैं , अन्तःकरण रोते रहते है

ं

हर मानव बना प्रतिद्वन्दी अखाड़ा बन गयी हर गृहस्थी
ऊपर से जो हँसकर ेबोले, उनके आघात सहते हैं

हर व्यक्ति है यहाँ स्वार्थी, मौका लगते सजा दे अर्थी
बैर-भाव को अन्दर रखे , मगरमच्छी आँसू बहते हैं

जीव जन्तु हुए खुदगर्ज, भूले धरा पे खुद का फर्ज
असर हुआ उन पर भी सबका , मानव में हैवान रहते हैं

समाचार

दूरदर्शन से आ रहे थे समाचार
इतने मरे , इतने घायल हुए

इतने भागे , इतने पकड़े गए
फलाँ जगह बम फटा , अपराध संगीन हुआ
फलाँ जगह गोली चली, माहौल गमगील हुआ

मन में कहीं भी पीड़ा नहीं थी
न थी संवेदना
फिर भी लेखक मन उत्साह से भ्ज्ञर गया
क्योंकिआज उसे लिखने को
एक नया विषय मिल गया

जैसे कोई चूहा या मेंढक मरा हो
विज्ञान के शोधार्थी को
स्वतः मृत जीव पर
हाथ आजमाने का मौका मिला हो

या सीजन में बीमारी फैलने पर
मन ही मन खुश होता है डाक्टर
बाहर से दुःखी
पर अन्दर सुखी
कि अब मिला है
कमाई का सुनहरा अवसर

किसी नेता को मुद्दा मिला हो
अपनीक संवेदना जताने का
मगरमच्छी आँसू बहानेका
आने वाले चुनावी मौसम में
वोटों से झोली भरने का
उसी तरह संवेदनाहीन होते हुए भी
सकुचाते हुए भी
मन में फैली खुशी की लहर
क्योंकि आज लिखने में
बीतेगा एक पहर

जब तक खेद के घर में

कोई बीमार नहीं पड़ा है
कोई परिचित या अजीज नहीं मरा है
तब तक खबर केवल खबर रहेगी
दिल के करीब नहीं होगी

खुद के दिल पर
होगी जब चांट
हम उद्यत होंगे
इस बीमारी का
इलाज करने क
...

[Message clipped]